एच आर मोईन मुजफरावी

बेगूसराय, बिहार

१

रास्ते अब हम बदलने को नहीं
साथ कोई आये तो चलने को नहीं

ज़िन्दगी को छोड़ कर जाएं कहाँ
ज़िन्दगी फिर तो मिलने को नहीं

आईए आकर ज़रा कुछ देखिए
ज़ख्म यूँ ही अब तो भरने को नहीं

उम्र गुज़रती जा रही है क्या करें
रोकने से भी तो रुकने को नहीं

जा रहे हो यूँ ही तो जाओ मोईन
संग दिल से बात बनने को नहीं

२

हर चेहरा अख़बार बना है
घर घर में पत्रकार बना है

मंहगाई भी ख़ूब बढी है
गली गली बाज़ार बना है

मंडी में मंदी है लेकिन
कैसा ये रोज़गार बना है

मरते हैं इंसान ही आख़िर
क्यों ऐसा हथियार बना है

खाकर दवाई जाने क्यों कर
जन जन फिर बीमार बना है

राज़ ए दिल को जिसे बताया
मोई वही अग़ियार बना है